INTELLIGENTSIA
International Journal of Multidisciplinary Research
Volume (1), Issue (2)
July - September, 2025
Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति विषयक चिंतन - एक समीक्षा

मिथलेश दास
शोध छात्र, हिंदी विभाग
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड

शोध सार :
साहित्य में प्रकृति चिंतन एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आकर्षक विषय रहा है। प्रकृति ही वह गोद है जिसमें मनुष्य ने जन्म लिया, पला-बढ़ा और जीवन जीना सीखा। जीवन के प्रत्येक चरण में प्रकृति ने मनुष्य का मार्गदर्शन किया है- चाहे वह मौसमों का चक्र हो, जीवन की गति हो या सौंदर्यबोध। मनुष्य स्वयं प्रकृति का ही एक अविभाज्य अंग है, अन्य जीवों की भाँति। शायद यही कारण है कि साहित्य में प्रकृति केवल एक पृष्ठभूमि न होकर, आत्मा के भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई है। हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक, सुमित्रानंदन पंत को 'प्रकृति के सुकुमार कवि' के रूप में विशेष पहचान प्राप्त हुई। उनका सम्पूर्ण काव्य प्रकृति के प्रति गहन प्रेम, आत्मीयता और दार्शनिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है। उनकी कविताएँ हिमालय की वादियों, झरनों की ध्वनि, फूलों की सुगंध, बादलों की गति और पक्षियों के स्वर जैसे प्राकृतिक दृश्यों को एक जीवंत संवेदना के रूप में प्रस्तुत करती हैं। पंत की प्रारंभिक रचनाओं– पल्लव, गुंजन, वीणा आदि में प्रकृति सौंदर्य का प्रतीक है, वहीं उत्तरवर्ती रचनाओं में यह विचार और दर्शन का माध्यम बन जाती है। उन्होंने प्रकृति को केवल बाह्य रूपों में नहीं देखा, बल्कि उसे आत्मा और ब्रह्म से जोड़कर उसके आध्यात्मिक स्वरूप को उद्घाटित किया। इस समीक्षा में पंत की काव्य-रचनाओं में प्रकृति के विविध रूपों, प्रतीकों, भावों और उनके प्रकृति-दर्शन की गहराई से पड़ताल की गई है।

कुंजी शब्द : सुमित्रानंदन पंत, प्रकृति चिंतन, छायावाद, सौंदर्यबोध

प्रकाशन समयरेखा:
मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 08 जुलाई, 2025; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 19 जुलाई, 2025; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 25 जुलाई, 2025; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 05 अगस्त, 2025
अनुशंसित संदर्भ
दास, एम. (2025). सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति विषयक चिंतन - एक समीक्षा. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(2), 29–36 .

- **परिचय**

प्रकृति और साहित्य- दो ऐसे शब्द हैं, जो जब साथ आते हैं, तो सृष्टि और संवेदना की अनूठी कविता रचते हैं। प्रकृति जहाँ जीवन का आधार है, वहीं साहित्य उस जीवन की आत्मा। मनुष्य ने जब पहली बार नील आकाश को निहारा, सरिता की लहरों को सुना, या झरते पत्तों की सरसराहट को महसूस किया- तो वह केवल दृश्य नहीं थे, वे अनुभव थे, भाव थे, जिन्हें उसने शब्दों में ढालने की आकांक्षा की। यही आकांक्षा साहित्य बनी, और प्रकृति उसका सबसे प्रथम प्रेरणा-स्रोत। साहित्य का आरंभ ही प्रकृति के सौंदर्य और रहस्यों के अनुभव से हुआ है। ऋग्वेद के ऋषि हों या कालिदास के मेघदूत, तुलसीदास के सरयू तट हों या पंत की हिमालयी घाटियाँ- सभी ने प्रकृति को आत्मा की भाषा में गाया है। प्रकृति कभी एक माँ बनकर कवि की पीड़ा को सहलाती है, कभी प्रेमिका बन उसके मन को चंचल करती है, और कभी दार्शनिक बनकर उसे जीवन के मर्म समझाती है। प्रकृति का सौंदर्य ही नहीं, उसका परिवर्तनशील स्वरूप भी साहित्य को ऊर्जा देता है। बसंत की कोमलता, वर्षा की रूमानी ध्वनि, शरद की निर्मलता या पतझड़ की उदासी- हर ऋतु साहित्य के भीतर एक नया भावजगत खोलती है। प्रकृति स्थूल नहीं, चेतन है- कवि के लिए वह कोई निर्जीव वस्तु नहीं, बल्कि सजीव सहचर होती है। सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे साहित्यकारों ने इसे अपनी आत्मा की भाषा बना दिया। इसलिए कहा जा सकता है कि साहित्य यदि आत्मा है, तो प्रकृति उसकी साँस है—जिसके बिना शब्द केवल अक्षर हैं, भावहीन, निर्जीव। प्रकृति और साहित्य का यह संवाद ही सृजन की सबसे पवित्र और शाश्वत अभिव्यक्ति है।

उत्तराखंड की शांत, सौंदर्य से परिपूर्ण वादियों में 20 मई 1900 को कौसानी नामक गाँव में एक बालक ने जन्म लिया- जिसने आगे चलकर हिंदी काव्य को एक नया स्वर, नई दृष्टि और नई आत्मा दी। यह बालक था सुमित्रानंदन पंत, जिसे हम आज 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहते हैं। माँ की गोद का सुख उसे नसीब न हुआ- जन्म के कुछ घंटों बाद ही मातृवियोग सहना पड़ा। पर शायद इसी पीड़ा ने उसकी संवेदना को गहराई दी, और जीवनभर वह संवेदना उसकी कविताओं में प्रकृति, प्रेम और पीड़ा बनकर बहती रही। बचपन में उनका नाम गोसाईं दत्त था। दादी की ममता में पले, और युवावस्था में प्रयाग की धरती पर जब उन्होंने शिक्षा ग्रहण की, तभी भीतर एक नई चेतना का जन्म हुआ। गांधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर कॉलेज त्याग दिया और जीवन को साहित्य की साधना में अर्पित कर दिया। हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेज़ी साहित्य का उन्होंने स्वाध्याय किया- पर उनके काव्य का मूल स्रोत तो वह प्रकृति थी, जिसे उन्होंने जिया, महसूस किया, और फिर शब्दों में ढाल दिया। उनकी कविताओं में हिमालय बोलता है, झरने गाते हैं, फूलों की खुशबू बसी रहती है। 'पल्लव', 'गुंजन', 'वीणा' जैसी रचनाएँ छायावाद की आत्मा बन गईं। फिर समय के साथ उनकी कविता ने करवट ली- 'ग्राम्या' और 'युगांत' में आम जन का संघर्ष गूंजा, और 'स्वर्णधूलि', 'रजत शिखर' में आत्मा की यात्रा दिखाई दी। 1958 में प्रकाशित *चिदंबरा* उनके काव्य का निचोड़ है- जिसके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। साहित्य अकादमी सम्मान, पद्मभूषण, और एक राष्ट्र की कृतज्ञता उनकी झोली में आए, पर वह सच्चा पुरस्कार तो वह प्रेम है, जो पाठकों के हृदय में आज भी उनकी कविताओं के लिए धड़कता है। 28 दिसंबर 1977 को प्रयाग में उन्होंने इस लोक से विदा ली, पर शब्दों की वह सुगंध आज भी कौसानी की हवाओं में बसी है... और हर उस दिल में, जो सौंदर्य और सच्चाई को महसूस कर सकता है।

- **पंत की रचनाओं में प्रकृति विषयक चिंतन का स्वरूप**

सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति चित्रण छायावादी काव्य की आत्मा है, जो केवल सौंदर्य वर्णन तक सीमित नहीं, बल्कि एक चेतन, भावनात्मक और दार्शनिक सत्ता के रूप में उभरता है, जो उनकी संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता और आध्यात्मिक गहराई को प्रकट करता है। उनकी जन्मभूमि कसौनी की प्राकृतिक सुंदरता-

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

हिमालय की शिखरें, नदियाँ, निर्झर और हरियाली- ने उनके काव्य को गहन प्रेरणा दी, जैसा कि वे स्वयं कहते हैं, "कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कुमाऊँ प्रदेश को है।" उनकी कविता *"संध्या"* में प्रकृति का मानवीकरण देखें: *"कहो तुम रूपसी कौन? व्योम से उतर रही चुपचाप, सुनहला फैला केश कलाप, मधुर, मंथर, मृदु, मौन।"* यहाँ संध्या एक नवयुवती बनकर जीवंत हो उठती है। इसी तरह, *"चांदनी"* में चांदनी को शारदीय हंसिनी के रूप में चित्रित किया गया: *"नीले नभ के शतदल पर वह बैठी शारद-हंसिनी, मृदु करतल पर शशि मुख धर निरब अनिमिय एकाकिनी।"* पंत की कविताएँ प्रकृति को भावनाओं के उद्दीपन के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं, जैसे *"मेरा पावस तु जीवन, मानस-सा उमड़ा अपार मन"* में मेघ कवि के भावनात्मक उमड़ाव का प्रतीक हैं। प्रकृति का आलंबन रूप उनकी कविता *"गिरि का गौरव गाकर हग्ग, मोती की लड़ियों से सुंदर झड़ते हैं झाग भरे निर्झर"* में देखा जा सकता है, जो यथावत सौंदर्य को उजागर करता है। *"नौका विहार"* में गंगा को तापस बाला के रूप में चित्रित कर जगत की शाश्वतता का संकेत दिया गया है: *"गंगा के जल चल में निर्मल कुम्हला किरणों का रक्तोपल, है मूंद चुका अपने मृदु दल।" एक तारा'*में उपनिषदों की दार्शनिक अवधारणा *"एकोऽहं बहुस्यामि"* प्रकट होती है: *"जगमग-जगमग नभ का आंगन, वह आत्म और यह जग-दर्शन।"* पंत की रचनाओं में प्रकृति कभी पृष्ठभूमि, कभी अलंकार, तो कभी रहस्यमयी सत्ता के रूप में उभरती है, जैसे *"क्षुब्ध जल शिखरों को जब बात सिंधु में मथकर फेनाकर, बुलबुलों का व्याकुल संसार बना"* में समुद्र की लहरें जिज्ञासा और रहस्य जगाती हैं। उनकी कविता *"प्रथम रश्मि"* में जिज्ञासा भाव है: *"प्रथम रश्मि का आना रंगीनी, तूने कैसे पहचाना?"* प्रकृति का कठोर रूप भी कभी-कभी दृष्टिगोचर होता है, जैसे *"पपीहों की यह पीन पुकार, निर्झरों की भारी झरझर"* में वर्षा की रात्रि का यथार्थ चित्रण। *"कलरव"* में संध्या का यथार्थ किंतु भावप्रवण चित्रण है: *"बांसों का झुरमुट/संध्या का छुट-पुट, है चहक रही चिड़िया टी वी टी।"* यहाँ बांसों में चहकती चिड़ियों और उदास मन से घर लौटते मजदूरों की विरोधपूर्ण स्थिति संध्या को व्यंजक बनाती है। पंत की कविताएँ प्रकृति को नारी रूप में भी प्रस्तुत करती हैं, जैसे *"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया, बाले तेरे बाल-जाल में उलझा दूं में कैसे लोचन?"* यहाँ प्रकृति का सौंदर्य नारी सौंदर्य से श्रेष्ठ बताया गया है। उनकी कविता *"मौन निमंत्रण"* में किशोरावस्था की जिज्ञासा प्रमुख है, जो प्रकृति के रहस्य को उजागर करती है। पंत का प्रकृति चिंतन कोमलता, जिज्ञासा और आध्यात्मिकता का संगम है। उनकी रचनाएँ प्रकृति के विविध रूपों- आलंबन, उद्दीपन, अलंकारिक, पृष्ठभूमि, रहस्यात्मक और दार्शनिक- के माध्यम से मानव जीवन के गहन सत्य को उजागर करती हैं। प्रकृति का उपयोग वे उपदेशात्मक रूप में भी करते हैं, जैसा कि *"बूंद अघात सहे गिरी कैसे"* में प्रकृति से नैतिक संदेश लिया गया है। पंत का प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण सुकुमार और सौंदर्यप्रधान है, जैसा कि वे कहते हैं, "साधारणतः प्रकृति के सुंदर रूप ही ने मुझे अधिक लुभाया है।" यह दृष्टिकोण उनकी कविताओं को छायावादी काव्य का शिखर बनाता है, जो हिन्दी साहित्य को सौंदर्य, प्रेम और दर्शन का त्रिवेणी संगम प्रदान करता है। उनकी रचनाएँ प्रकृति और मानव जीवन के बीच गहरे संबंध को रेखांकित करती हैं, जिससे पंत छायावाद के एक अनमोल रत्न बन जाते हैं।

- **पंत की रचनाओं में प्रकृति विषयक चिंतन का स्वरूप की समीक्षा**

सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति का स्थान केंद्रीय है । उनके लिए प्रकृति केवल बाह्य सौंदर्य का दृश्य नहीं, बल्कि वह एक सजीव सत्ता है जो मनुष्य के भावलोक, चेतना और आत्मा से सीधे संवाद करती है । छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में पंत को "प्रकृति के कवि" के रूप में विशेष पहचान मिली । उनकी कविताओं में प्रकृति की भूमिका इतनी व्यापक है कि वह उनके काव्य का प्राणतत्व बन जाती है । पंत की कविताओं में हिमालय, सरिता, पुष्प, वृक्ष, ऋतुएँ और आकाश जैसे प्रकृति के तत्व निरंतर उपस्थित रहते हैं । इन प्रतीकों के माध्यम से वे मानवीय भावनाओं की गहराइयों को चित्रित करते हैं । उनका मानना था कि प्रकृति की लयात्मकता ही जीवन का

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

मूल संगीत है । उदाहरण के लिए, उनके *गुंजन* और *पल्लव* संग्रहों की कविताओं में प्रकृति का सौंदर्य चित्रण अत्यंत कोमल और चित्रात्मक शैली में हुआ है:-

"हिमालय की चोटी पर बैठा
देख रहा मैं सारा जीवन!" (पंत, 1932)

यहाँ हिमालय केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं, बल्कि चिंतन और आत्मावलोकन का स्थल बन जाता है । इसी प्रकार *पल्लव* की कविताएँ वसंत, फूल, भ्रमर और पत्तों की छाया में प्रेम और सौंदर्य के गहन भावों को उभारती हैं । पंत के लिए प्रकृति एक शिक्षिका भी है – जो उन्हें सौंदर्यबोध, धैर्य, त्याग और आध्यात्मिकता सिखाती है वे मानते थे कि मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति से जुड़ा है और उससे कटकर वह आत्महीन हो जाता है (द्विवेदी, 1955)। इसीलिए वे बार-बार प्राकृतिक परिवेश में लौटते हैं – बचपन के कौसानी की हरी-भरी वादियाँ उनके काव्य की आत्मा बन जाती हैं । उनकी कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नदियाँ बोलती हैं, फूल मुस्कराते हैं, चाँदनी आलिंगन करती है – यह सब उनकी प्रकृति चेतना को मानव अनुभव के निकट लाते हैं । उदाहरणतः:-

"चाँदनी के मधुर करों में
लिपटी वह निशा की कन्या।" (पंत, 1932)

इस पंक्ति में प्रकृति को मानवी रूप देकर भावनात्मक सौंदर्य का वातावरण रचा गया है (सिंह, 1980)। पंत की प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति सौंदर्य की प्रतीक थी, लेकिन समय के साथ उसमें दार्शनिकता और आध्यात्मिकता का समावेश हुआ । उनकी *उत्तरायण, युगांत, लोकायतन* जैसी कृतियों में प्रकृति अब केवल दृश्य न रहकर ब्रह्मांडीय चेतना का माध्यम बनती है । वह आत्मा और परमात्मा के संवाद की भूमि बन जाती है। इसके अतिरिक्त, पंत की प्रकृति दृष्टि में भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का गहरा प्रभाव है (मिश्रा, 1985)। वेदों, उपनिषदों और योग दर्शन से प्रेरित होकर वे प्रकृति को "ऋत" अर्थात् सार्वभौमिक नियम के रूप में देखते हैं । यह दृष्टिकोण उनके प्रकृति चित्रण को गहराई और व्यापकता प्रदान करता है। छायावाद की अन्य प्रवृत्तियों के साथ, पंत की प्रकृति दृष्टि भी आत्मकेंद्रितता, सूक्ष्मता और रहस्यबोध से ओत-प्रोत है। परंतु उनकी विशेषता यह है कि वे प्रकृति को केवल भावनात्मक रूप से नहीं, बल्कि बौद्धिक और आध्यात्मिक धरातल पर भी समझते हैं । यही कारण है कि उनकी प्रकृति चेतना हिंदी कविता में एक अद्वितीय और विस्तृत छवि प्रस्तुत करती है । इस प्रकार, सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति की भूमिका केवल पृष्ठभूमि की नहीं, बल्कि एक सक्रिय, सजीव और संवेदनशील सहचर की है – जो कवि के भावों, विचारों और आत्मिक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने का माध्यम बनती है ।

सुमित्रानंदन पंत की काव्य-सृष्टि में प्रकृति केवल बाह्य सौंदर्य की अनुभूति नहीं है, बल्कि वह आत्मा के गहन अनुभव, चिंतन और चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। पंत की कविताएँ प्रकृति के माध्यम से आत्म का बोध कराती हैं – वह आत्मा और ब्रह्म के बीच सेतु का कार्य करती है। यह विशेषता उन्हें छायावादी युग के अन्य कवियों से अलग बनाती है । पंत मानते थे कि प्रकृति और आत्मा के बीच कोई भेद नहीं है; प्रकृति वस्तुतः आत्मा का ही विस्तार है । उनका यह दृष्टिकोण भारतीय वेदांत दर्शन से प्रेरित है, जहाँ प्रकृति को 'माया' और 'प्रकृति' दोनों रूपों में देखा गया है – एक ओर मोहक, दूसरी ओर सृजन का मूल। इसी चेतना से पंत का कवि मन प्रकृति में आत्मा के प्रतिबिंब को खोजता है। उदाहरण स्वरूप वे लिखते हैं:

"मैं नहीं अकेला इस नील नभ में,
साथ हैं मेरे पग-पग छायाएँ!" (पंत, 1932)

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

यहाँ कवि की आत्मा को प्रकृति की छाया में संगति मिलती है, जिससे उसका अकेलापन मिटता है । यह आत्मीयता ही पंत के प्रकृति चित्रण को भावात्मक गहराई देती है । पंत के लिए प्रकृति ध्यान और एकाग्रता की भूमि है । हिमालय, वनों की शांति, पंछियों की ध्वनि, और वायु की लय उन्हें आत्मचिंतन की ओर ले जाती है । इसीलिए वे प्रकृति के शांत क्षणों में ही अपनी आत्मा की स्पष्ट प्रतिध्वनि सुन पाते हैं । *उत्तरायण* में यह भावना स्पष्ट होती है:

"एकांत की वह पुकार,
जो प्रकृति में आत्मा की ध्वनि बन उठी।" (पंत, 1960)

प्रकृति उनके लिए आत्मा की गहराई में उतरने का साधन बन जाती है । बाहरी दृश्यावली के माध्यम से वे भीतरी जिज्ञासा और खोज को स्वर देते हैं । यही कारण है कि उनकी कविता में बार-बार 'अकेलापन', 'निशा', 'नीलिमा', 'शून्यता' जैसे प्रतीक उभरते हैं, जो ध्यान और आत्मसाक्षात्कार के प्रतीक हैं । पंत की आत्मानुभूति केवल वैयक्तिक नहीं, बल्कि सार्वभौमिक है । वे अपनी चेतना को प्रकृति के व्यापक स्वरूप में विलीन कर देते हैं । वेदांत दर्शन के अनुसार 'आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं' – पंत इसी विचार को अपनी कविताओं में सौंदर्य और प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करते हैं । जैसे:

"मैं ही हूँ यह सारा प्रसार,
प्रकृति नहीं है मुझसे परे।" (पंत, 1960)

यहाँ कवि का आत्मबोध चरम पर है, जहाँ प्रकृति और आत्मा एक हो जाते हैं । यह एक प्रकार का अद्वैतवादी अनुभव है, जहाँ द्वैत समाप्त हो जाता है और केवल चेतना की सत्ता रह जाती है । उनकी रचनाओं में आत्मा और प्रकृति का यह द्वंद्व और समन्वय एक सूक्ष्म दार्शनिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है । यह अनुभव केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि गहराई से भावनात्मक भी है । प्रकृति के माध्यम से आत्मा की खोज और आत्मा के माध्यम से प्रकृति की अनुभूति – यह द्विवेधी दृष्टिकोण पंत की काव्य चेतना की विशिष्टता है। इस प्रकार, पंत की कविताओं में प्रकृति और आत्मा का संबंध केवल सौंदर्यपरक या भावनात्मक नहीं, बल्कि वह आध्यात्मिक और दार्शनिक चेतना का वाहक है। उन्होंने प्रकृति को आत्मानुभूति के लिए साधन बनाया और आत्मा की गहराइयों में उतरकर प्रकृति को ब्रह्मरूप में देखा। यही दृष्टिकोण उनके काव्य को एक विशिष्ट ऊँचाई प्रदान करता है ।

सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रेम एक सूक्ष्म और सौंदर्यपूर्ण अनुभूति है, जिसका अभिव्यक्ति माध्यम अक्सर प्रकृति बनती है। पंत के लिए प्रेम केवल लौकिक आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मा की कोमलतम संवेदना है, जो प्रकृति के सौंदर्य से अभिसिंचित होती है। उनकी कविताओं में प्रेम और प्रकृति का अद्‌भुत तादात्म्य दिखाई देता है- जहाँ फूलों की कोमलता, पवन की मंदता, चाँदनी की शीतलता और वनों की शांति, सब कुछ प्रेम के प्रतीक बन जाते हैं। पंत के छायावादी काव्य में नारी और प्रकृति – दोनों को सौंदर्य और प्रेम का आदर्श रूप माना गया है। नारी को उन्होंने प्रकृति की तरह सौंदर्य से परिपूर्ण, कोमल, रहस्यमयी और आत्मीयता से भरी हुई सत्ता के रूप में चित्रित किया। उनकी कविता में प्रेमिका की उपस्थिति अक्सर पुष्पों, घटाओं, नदियों या वसंत के रूपक के साथ होती है। जैसे वे लिखते हैं:

"तुम फूलों के जैसे मुस्काते,
मैं पवन की तरह बह जाता।" (पंत, 1932)

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

यहाँ प्रेम की भावनाएँ प्रकृति के माध्यम से सहज और आत्मीय बन जाती हैं। यह प्रेम केवल देह तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों तक पहुँचने वाला है। प्रकृति पंत के प्रेमबोध में सहचरी बनकर उपस्थित होती है। जब प्रेम में उल्लास होता है, तो प्रकृति भी वसंत से भर उठती है; और जब प्रेम में पीड़ा होती है, तो प्रकृति भी गहन निशा, शून्यता या पतझड़ का प्रतीक बन जाती है। यह समांतरता पंत की कविताओं में बार-बार देखने को मिलती है। उदाहरण:

"विरह की बेला में चाँदनी भी
उदास चुपचाप बही।" (पंत, 1932)

इस पंक्ति में चाँदनी को प्रेम की पीड़ा की साक्षी के रूप में चित्रित किया गया है। पंत का प्रेम आध्यात्मिकता की ओर भी उन्मुख है। उनकी कविताओं में प्रेम धीरे-धीरे शरीर और भावना की सीमाओं से ऊपर उठकर एक प्रकार की शुद्ध चेतना का रूप ले लेता है। यह प्रेम, कबीर और मीरा की तरह, मिलन से अधिक विरह में रस पाता है। प्रकृति इस आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त प्रतीकों की आपूर्ति करती है – जैसे नीला आकाश, चुप निशा, हिमालय की चोटी, या नीरव नदी का प्रवाह।उनकी कविता "नव जीवन" में प्रेम और प्रकृति का गहन मिलन इस प्रकार उभरता है:

"मैं पथिक, तू पथ की छाया,
मैं वन, तू उसमें मलय समीर।" (पंत, 1947)

यहाँ प्रेमिका स्वयं प्रकृति के तत्व बन जाती है, और कवि का प्रेम उसकी उपस्थिति में अपना अस्तित्व पाता है। पंत की विशेषता यह है कि वे प्रेम को कभी भी असंयमित अथवा उच्छृंखल नहीं बनाते। उनके प्रेम में एक सांस्कृतिक मर्यादा, भावुकता की गहराई और सौंदर्य का परिष्कार होता है, जिसे वे प्रकृति के सौंदर्य से जोड़कर और भी संवेदनशील बना देते हैं। अतः स्पष्ट है कि पंत के काव्य में प्रेम का अभिव्यक्ति माध्यम प्रकृति है – वह प्रेम की साक्षी भी है, और सहचर भी। प्रकृति के रंगों में, ध्वनियों में, मौन में, और गति में प्रेम की सूक्ष्मतम अनुभूतियाँ रची-बसी हैं। पंत ने प्रकृति और प्रेम को इस प्रकार एकाकार कर दिया है कि दोनों एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में जहाँ एक ओर प्रकृति सौंदर्य, आत्मानुभूति और प्रेम का माध्यम है, वहीं दूसरी ओर वह राष्ट्र चेतना और सामाजिक बदलाव की प्रेरक शक्ति भी बन जाती है। विशेष रूप से स्वतंत्रता संग्राम के कालखंड में पंत की कविताओं में प्रकृति एक प्रतीक बनकर उभरती है- कभी वह भारत माता की छाया बनती है, तो कभी मुक्ति और नवजीवन का उद्घोष। पंत के विचार में प्रकृति मात्र सौंदर्य और सुकून का साधन नहीं, बल्कि वह शक्ति, संघर्ष और जागरण का स्रोत भी है। उनकी कविताओों में हिमालय, गंगा, वसंत और सूर्य जैसे प्रकृति तत्वों के माध्यम से देशभक्ति और सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है। उदाहरण स्वरूप:

"हे भारत! हिमगिरि समान तू,
उठ, जाग, बन जीवन महान तू!" (पंत, 1947)

यहाँ हिमालय को भारत की आत्मा का प्रतीक बनाकर देश के नवजागरण का आह्वान किया गया है। पंत के लिए हिमालय केवल एक भौगोलिक पर्वत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, साहस और स्थायित्व का प्रतीक है। उनकी काव्य चेतना में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि प्रकृति केवल निजी भावनाओं तक सीमित नहीं है, वह सामाजिक संदर्भों में भी जीवंत है। विशेषतः उनके "युगांत", "लोकायतन" और "ग्राम्या" जैसे संग्रहों में प्रकृति

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

ग्रामीण भारत, श्रमशील समाज और सामान्य जन की पीड़ा का चित्रण करती है। वे प्रकृति के माध्यम से भारतीय गाँवों की साधारणता, मेहनत और जीवन-संघर्ष को स्वर देते हैं।

"ग्राम पथों पर मूक धूल उड़ती,
कृषक चला जाता मौन तपस्वी।" (पंत, 1947)

यहाँ प्रकृति के परिवेश में किसान की छवि गढ़ी गई है, जो सामाजिक यथार्थ को उभारती है। इस प्रकार प्रकृति सामाजिक और वर्गीय चेतना की संवाहक बन जाती है।वसंत, जो सामान्यतः आनंद और प्रेम का प्रतीक होता है, पंत के काव्य में एक नवीन जीवन, स्वतंत्रता और परिवर्तन का द्योतक बन जाता है। "वसंत" शीर्षक कविता में वे लिखते हैं:

"नव जीवन का नव विग्रह तू,
नव भारत का स्वप्न सुहावन!" (पंत, 1947)

यहाँ वसंत को नवभारत के पुनर्जागरण से जोड़ा गया है- जो राजनीतिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक जागृति दोनों का प्रतीक है। पंत का राष्ट्रवाद केवल नारा या भावुकता तक सीमित नहीं, बल्कि वह प्रकृति और जीवन के समग्र बोध से उत्पन्न हुआ राष्ट्रवाद है। उनका दृष्टिकोण समावेशी है- जिसमें संस्कृति, प्रकृति, श्रम, भाषा और चेतना सभी को समाहित किया गया है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि एक जागरूक समाज के लिए प्रकृति का बोध आवश्यक है, क्योंकि वही जीवन की ऊर्जा और संतुलन का स्रोत है। उनकी कविता में प्रकृति और राष्ट्र की पहचान आपस में गुथी हुई प्रतीत होती है- भारत की भूमि, उसका आकाश, नदियाँ, वन, पर्वत- सब कुछ कवि के लिए मातृभूमि की संवेदना से ओतप्रोत हैं । उनकी यह पंक्तियाँ बहुत ही सशक्त प्रतीक हैं:

"भारत की नीलिमा हूँ मैं,
उसकी माटी, उसकी वाणी।" (पंत, 1947)

इस प्रकार, सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति के माध्यम से राष्ट्रवाद को एक सांस्कृतिक और आत्मिक आयाम प्रदान किया। वे केवल भौगोलिक स्वतंत्रता की बात नहीं करते, बल्कि आत्मा की स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की कल्पना करते हैं – और इसके लिए प्रकृति उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा बनती है।

- **निष्कर्ष**

सुमित्रानंदन पंत की काव्य-सृष्टि में प्रकृति विषयक चिंतन एक गहन, बहुआयामी और दार्शनिक यात्रा है। उनकी कविताओं में प्रकृति न केवल एक बाहरी दृश्य या सौंदर्य की वस्तु के रूप में उपस्थित है, बल्कि वह आत्मा के प्रतिबिंब, प्रेम की अभिव्यक्ति, सामाजिक चेतना का द्योतक और आध्यात्मिक अनुभूति का माध्यम भी है। पंत ने प्रकृति को एक जीवंत, चेतन और संवादात्मक सत्ता माना, जिसके साथ मनुष्य की आत्मा का गहरा सम्बन्ध है। प्रारंभिक काल में पंत ने प्रकृति की कोमलता, सौंदर्य और रोमांटिकता का चित्रण किया, जो छायावाद की परंपरा से जुड़ा था। इस काल की कविताएँ प्रकृति के माध्यम से प्रेम, सौंदर्य और मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करती हैं। मध्य काल में उनकी दृष्टि ने व्यापक सामाजिक और दार्शनिक आयाम ग्रहण किए। यहाँ प्रकृति आत्मचिंतन, एकांत और सामाजिक यथार्थ की संवाहिका बनी। उन्होंने प्रकृति को देशभक्ति और जन-जीवन के संदर्भ में भी सशक्त किया। उत्तरकाल में पंत की प्रकृति-दृष्टि आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त हुई, जहाँ प्रकृति ब्रह्म की सार्वभौमिक सत्ता के रूप में उभरी। पंत की कविता में प्रकृति का यह निरंतर विकसित होता रूप उनकी रचनात्मकता और विचारधारा की गहराई को दर्शाता है। प्रकृति उनके लिए जीवन का मूल तत्व, प्रेम की अभिव्यक्ति, सामाजिक

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

चेतना की वाहक और आध्यात्मिक अन्वेषण का स्रोत रही। उनका यह चिंतन भारतीय दर्शन, छायावाद, और स्वतंत्रता संग्राम की सामाजिक-राजनीतिक चेतना के बीच की एक अद्भुत संधि है। अंततः, पंत ने प्रकृति को केवल कविता का विषय नहीं बनाया, बल्कि उसे जीवन-दर्शन, प्रेम और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़कर एक समग्र काव्य चेतना का निर्माण किया। उनकी कविताएँ हमें प्रकृति के साथ मनुष्य के अंतर्मिलन, भावनात्मक समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति की राह दिखाती हैं। इस दृष्टि से सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के ऐसे कवि हैं जिन्होंने प्रकृति को मानव जीवन और चेतना का अभिन्न हिस्सा बनाकर उसे साहित्य की उच्च कोटि तक पहुँचाया।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, राम, "छायावाद में प्रकृति चित्रण". *हिंदी साहित्य का इतिहास*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 1955, पृ. 234-40
2. गुप्ता, श्याम. "राष्ट्रवाद और प्रकृति बोध". *साहित्य समीक्षा*, खंड 12, अंक 3, 1998, पृ. 45-52।
3. मिश्र, विष्णु नारायण. *भारतीय काव्य में प्रकृति चिंतन*. प्रकाशन विभाग, पटना, 1985।
4. पंत, सुमित्रानंदन. "ब्रह्म और प्रकृति" *चिदंबरा*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960, पृ. 102-10।
5. *स्वर्ण किरण*. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 1952।
6. "वसंत की चेतना" *युगांत*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 1932, पृ. 45-50।
7. "प्रकृति और आत्मा" *लोकायतन*, खंड 7, अंक 2, प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 1947, पृ. 89-95।
8. शर्मा, मोहन. "पंत की प्रकृति दृष्टि" *सुमित्रानंदन पंत: जीवन और काव्य*, साहित्य भवन, लखनऊ,1975, पृ. 78-85।
9. सिंह, हरपाल. "प्रकृति और छायावाद" *छायावादी काव्य और सुमित्रानंदन पंत*, काशी विद्यापीठ प्रकाशन, वाराणसी,1980, पृ. 33-40।
10. ठाकुर, राजेश "हिंदी कविता में प्राकृतिक प्रतीक" *हिंदी काव्य में प्रकृति चिंतन*, हिंदी अकादमी, दिल्ली, 1990, पृ. 67-75।
11. त्रिपाठी, अनिल. "*प्रकृति और प्रेम: हिंदी कविता का दृष्टिकोण*", राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
12. वर्मा, लक्ष्मी. "पंत का विकासवादी दृष्टिकोण." *छायावाद से आधुनिकता तक: हिंदी कविता का विकास*, हिंदी साहित्य भवन, इलाहाबाद, 2010, पृ. 89-95।

******

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved